नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन।
यों खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन।। १ ।।

नग और आभूषण दोनों नूर के हैं और चेतन हैं। इनकी शोभा अंग की शोभा के साथ-साथ बढ़ती है। इस तरह श्री राजजी की तारतम वाणी ने आत्मा को माया से खींचकर जागृत कर दिया और बेसुधी से होश में लाकर जोश देकर घर में बुला लिया।

सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका।
यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराई सांई हाथ सका।। २ ।।

हम रूहों के सब अंग इश्क से भरपूर हैं। इश्क के बढ़ते रस में परमधाम आए। इस तरह से मोमिनों की पूरी जमात इश्क से भरी हुई घर में आकर अपने पिलाने वाले धनी के हाथ से उनके दिल रूपी सुराही से इश्क की शराब को पीते हैं।

हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अर्स माहें तन।
बृज रास जागनी तीनों सुख देय के, मोमिन तन किए धंन धंन।। ३ ।।

इस बार फिर श्री राजजी महाराज ने माया से निकाल लिया। रूह मोमिन अपने असल तन में घर परमधाम पहुंचे। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को बृज, रास और जागनी के सुख देकर धन्य-धन्य किया।

भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत।
क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत।। ४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के दिल की बातों को कहती हैं, क्योंकि इन्होंने ही ब्रह्मसृष्टि की जमात को मूल-मिलावा में इश्क की न्यामत से पहुंचाया। अब इन मोमिनों की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? क्योंकि ब्रह्माण्ड को कायम करने की लज्जत इनको मिली।

॥ प्रकरण ॥ ११६ ॥ चौपाई ॥ १६९६ ॥

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न माहें अंग।
जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सें, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपने माशूक श्री राजजी के अर्श, अर्थात् मेरा दिल ही उनका ठिकाना है, में उनसे मिली। मुझ आशिक के अंग में अब खुशी नहीं समाती (क्योंकि दोनों एक अंग हो गए)। मुझे ऐसा लगा कि जैसे रात्रि में मैं अपने धनी से अलग हो गई थी और अब ज्ञान के सवेरे से मुझे पता लगा कि मैं प्रीतम के पास हूं।

मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात।
एक अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अर्स बका बिसात।। २ ।।

मन, वचन, तन, जात (व्यक्तित्व), सिफात (गुण) तथा सभी बातें एक हो गईं। अब हम दोनों के मिलने से एक तन हो गए और अखण्ड घर की बिसात (न्यामत) में एक विचारमय हो गए।

नाहीं जुदा कांही जांही अर्स मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए।
तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कह्या, अव्वल आखिर मिले एक हुए न जुए।। ३ ।।

परमधाम के बीच में जुदाई कहीं नहीं है। वहां हम रूहें श्री राजजी महाराज से मिलकर एकाकार हुए, तो मेरा दिल ही धनी का घर बन गया जिसको श्री प्राणनाथजी ने स्वीकार किया। जैसे पहले परमधाम में थे वैसे आखिर में भी एक हो गए। अलग नहीं हुए।

Nijanand App